प्रेस विज्ञप्ति

आचार्य महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति

सरदारशहर 331 401

Email : terapanthpr@gmail.com * Fax : 01564-220 233

तेरापंथ भवन में प्रवचन

आचार्यश्री महाश्रमण का 72 संस्थाओं द्वारा नागरिक अभिनन्दन

अपराध का कारण काम आर काध ह : आचार्य महाश्रमण

सरदारशहर 16 जुलाई, 2010

तेरापंथ भवन में आचार्यश्री महाश्रमण का स्थानीय अनेक संस्थाओं द्वारा नागरिक अभिनन्दन किया गया, जिसमें 72 समाजिक व शिक्षण संस्थाओं द्वारा आचार्यश्री महाश्रमण को मोमेंटो, साहित्य भेंट कर नागरिक अभिनन्दन किया गया।

नागरिक अभिनन्दन समारोह के अवसर पर आचार्यश्री महाश्रमण ने अपने दैनिक प्रवचन में कहा कि मनुष्य अनेक चित्तों वाला होता है। एक व्यक्ति को शांति में देखा जा सकता है तो उसे कभी आक्रोश में भी देखा जा सकता है, विनम्रता देखी जा सकती है तो कभी उसमें अहंकार के भाव भी देखा जा सकता है। मनुष्य में अच्छे भाव भी उजागर होते हैं और बुरे भाव भी उजागर होते हैं, बुरे भाव उजागर होते हैं तो वह कभी अपराधी भी बन जाता है।

आचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि आदमी में काम, क्रोध जागता है तो वह अपराधक की दिशा में बढ़ जाता है उन्होंने कहा कि आदमी को सर्व प्रथम सम्यक ज्ञान प्राप्त करना चाहिए, सम्यक ज्ञान अर्थात जिस व्यक्ति में सही ज्ञान नहीं होता है तो उसे अच्छे और बूरे काम का भान भी नहीं होता है, इसलिए जरूरी है ज्ञान प्राप्त करना। उन्होंने अपराध का दूसरा कारण अभाव को बताया कि अभाव के कारण भी आदमी अपराध में जाता है। आचार्यश्री महाश्रमण ने आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा चलाये गये अहिंसा प्रशिक्षण की जानकारी देते हुए कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ ने अहिंसा प्रशिक्षण काम चलाया जिससे आदमी को आजीविका मिले और वह गलत कामों में न जाए, तीसरा अपराध का कारण है गुस्सा आवेश जिसके कारण आदमी अपराध कर लेता है।

आचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि मनुष्य अपनी चेतना को निर्मल बनाने का प्रयास करे और प्रयोग के द्वारा संभव है जिससे कि चेतना को निर्मल बनाया जा सकता है। अनुकंपा की चेतना का विकास होना चाहिए दूसरों के दु:ख को दूर करने की चेष्टा हो, जितना संभव हो सके मानसिक शांति पहुंचे ऐसा प्रयास व्यक्ति को करना चाहिए, धर्म का सार भी मैत्री और सद्भावना है।

आचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि सरदारशहर की जनता ने हमारा नागरिक अभिनन्दन किया तो ये संस्थाएं पवित्र कार्य करती रहे, सभी में प्रेम, मैत्री की भावना रहे, एक पशु को भी मनुष्य के द्वारा कष्ट न पहुंचे पशु के प्रति भी अहिंसा, मैत्री की भावना रहे ऐसा प्रयास होना चाहिए।

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने कहा कि संत गांव में सूरज बनकर आते हैं वे संदेश देते हैं कि जागो प्रमाद मत करो और कभी संत पक्षी बनकर आते हैं गीत सुनाते हैं कि अपने आपको संभालो, आपका यह घर स्थायी नहीं है आगे भी जाना है। संत लोगों का एक ही संदेश होता है किन्तु उनके उपदेश का तरीका अलग-अलग होता है उनका यही संदेश होता है कि अपने अच्छे संस्कारों का निर्माण हो।

इस अवसर पर चातुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष सुमतिचन्द गोठी, स्थानीय विधायक अशोक पींचा, नगरपालिका अध्यक्ष ज्यान मोहम्मद आदि ने अपनी भावना व्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन जगदीश प्रसाद अग्रवाल ने किया।

विशेष :

स्थानी जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष अशोक नाहटा ने जानकारी देते हुए बताया कि आज (18 जुलाई को) स्थानीय सभा द्वारा महाप्रज्ञ अध्यात्म एजुकेशनल फाउण्डेशन के कार्यकारणी सदस्यों का अभिन्ननन्दन किया जाएगा।

– **शीतल बरड़िया** (मीडिया संयोजक)